कामायनी में रूपक तत्वद्ध

श्रीमति विकेश बाला

कामायनी आधुनिक युग का महाकाव्य है। प्रसाद ने कामायनी में स्थूल कथा के साथ–साथ सांकेतिक शैली मे एक अन्य कथा का भी समावेश कर दिया है। इसी सांकेतिक एंव प्रतीकात्मकता के कारण कामायनी को एक रूपक काव्य कहा गया है। कामायनी एक रूपक काव्य मानी गई है।

रूपक के तीन अर्थ माने गए है। पहले अर्थ मे दृश्य काव्य में है जिसका सम्बन्ध नाटय विध या अभिनय से है। दूसरे अर्थ में रूपक एक अलंकार है जहाँ उपमेय पर उपमान का निषेध रहित आरोप है। रूपक का तीसरा नाम 'एलिगरी' कथा है जिसे द्विअर्थक कथा का नाम दिया गया है।

कामायनी की कथा द्विअर्थक है क्योंकि इसमें एक ओर तो श्रद्धा इड़ा और मनु का उपाख्यान है तो दूसरी और ह्रदय और मन के क्रमिक विकास का भी निरूपण किया गया है। कोई भी द्विअर्थक कथा या रूपक कथा अपनी प्रस्तुत कथा के साथ साथ एक अप्रस्तुत कथा को भी वहन करती है। कामायनी के रूपक तत्व पर चर्चा करते हुए स्वंय श्री जयशंकर प्रसाद ने लिखा है '' यह कथा इतिहास तथा पुराण सभी जगह बिखरी हुई है। मनु, श्रद्धा, इड़ा अपना ऐतिहासिक महत्व रखते हुए भी यदि दार्शनिक और प्रतिकात्मक अर्थ भी दे तो मुझे कोइ ऐतराज नही है।''

आचार्य शुक्ल ने कामायनी को रूपक का नाम नही दिया है लेकिन इसकी प्रतीकात्मकता को अवश्य स्वीकार किया है। उनका कहना है कि प्रसाद जी ने इस रचना मे जीवन की समस्याओं को उठाया है लेकिन उनका समाधन कुछ कमजोर कर दिया है।

डॉ नगेन्द्र ने कामायनी के रूपक तत्व की जमकर प्रशंसा की है। उनके अनूसार मनु मन का परिचायक है। श्रद्धा ह्रदय की जबकि इड़ा बुदि तत्व का परियाचक है। आचार्य नंददुलारे वाजपायी तथा डा शम्भूनाथ सिंह ने भी कामायनी को एक रूपक माना है। मुक्तिबोध ने कामायनी को रूपक न मानकर पफटांशी ;दिवा–स्वप्नद्ध का नाम दिया है। यह निश्चित है कि कामायनी कथा अप्रस्तुत भावो तथा प्रतीको से जुड़ी है।

कामायनी मे साकेंतिकता होने के साथ साथ इसके अधिकांश पात्रा साकेंतिक है। मनु तो मननशील, संकल्प विकल्प युक्त एंव अहंभाव मे लीन रहने के कारण मन या चेतना के प्रतीक है। श्रद्धा ह्रदय का प्रतीक है। इड़ा को प्रसाद जी ने बुद्दि का प्रतीक माना है।

कामायनी की घटनाएं भी प्रतीकात्मकता अर्थ की व्यंजना करती है। साश्स्वत नगर प्राणमय कोश का प्रतीक है। साश्स्वत नगर के निवासी मनु के सहयोगी होते हुए भी मनु के विराधी बन जाते हैं वो मनु की सहगामिनी इन्द्रियों के प्रतीक है। पशु यज्ञ पाप का प्रतीक है। वृषभ भोगों से युक्त ध्र्म का प्रतीक है जिसका त्याग करके मानव अखण्ड, आनन्द को प्राप्त करता है। सरोवर समरसता का प्रतीक है। कैलाश शिखर आनन्दमय कोष का प्रतीक है क्योकि वंहा कामायनी के सभी पात्रों को अखण्ड आनन्द की प्राप्ति होती है।

यह कथा 15 सर्गो में विभाजित है। जिसकी मुख्य घटनाओं देव दृष्टि के भोग विलास से प्रलय, देव सृष्टि का अन्त, मनु की निराशा, उषा का आगमन, मनु का एकाध्किार और भोगवाद, कर्मवाद के बाद उद्योगवाद की स्थापना तथा कैलाश आरोहन आदि की चर्चा की जा सकती है ये सारी घटनाएं प्रतीकों से जुड़ी हुई है। देव सृष्टि का भोग विलास सामन्ती भोग विलास है। जल प्रलय पराधीनता का परिचायक है। उषा का

आगमन नव जागरण परक चेतना का परिचायक है। मनु का भोगवाद सामन्ती भोगवाद का परिचालक है।

कामयनी मनु, श्रद्धा और इड़ा के माध्यम से एक तरपफ मानव सभ्यता के विकास को दर्शाती है। दूसरी तरपफ इसके सर्गों के नाम करण मनो भावों के परिचालक है। प्रसाद जी ने मनुष्य के मनो वैज्ञानिक विकास को ध्यान में रखकर इस रचना को लिखा। कामायनी की केन्द्रीय समस्या विषमता तथा असंतुलन की रही है।

''विषमता की पीड़ा से रूपन्दित हो रहा विश्व महान।''

प्रसाद जी इस बात से भलि–भांति परिचित थे कि यह विषमता जितनी बाहरी है उतनी आन्तरिक भी है। सामाजिक विषमता का सबसे बड़ा कारण हमारे आन्तरिक भावों के बीच असंमजस्य भी है। कामायनी यदि एक अतिस्य सामन्ती भोगवाद के विरोध में खड़ी है तो दूसरी ओर पश्चिमी उपभोक्तावादी विरोध में। इस रचना की नायिका श्रद्धा मनु को समन्यवय की सीख देती है।

''कर्म का भोग, भोग का कर्म,
यही जड़ चेतन का आनन्द''

यद्यपि कामायनी में रूपक तत्व का निर्वाह प्रसाद जी बहुत ही मनोयोग से किया है। पिफर भी इसमें रूपक काव्य की सभी विशेषताएं नहीं मिलती है। कामायनी के पात्रा ऐतिहासिक होने से कल्पित नही माने जा सकते। जबकि रूपक काव्य की सभी घटनाएं, पात्रा कल्पित होती है। कामायनी के प्रतीक उसे पूरी तरह से रूपक काव्य की कोटि में नही ले सकते। रूपक काव्य के समस्त प्रतीकों को निर्वाह भी नही है। नवमानव के प्रतीक कुमार की इस रूपक कथा से कोई संगति नही है। कोष सम्बन्धी कल्पना का भी पूरा–पूरा समाहार कामायनी में नही है।

निष्कर्ष के रूप में कह सकते हैं कि प्रसाद का दृष्किोण पौराणिक आख्यान के सहारे आधुनिक मानव को संदेश देना था। इस लिए रूपक काव्य का सहारा लिया।

प्रतीकात्मकता तो आधुनिक महाकाव्य का एक लक्षण है इसलिए कामायनी के प्रतीक उसे पूर्ण रूपेण रूपक काव्य की कोटि में नहीं ले जाते।